

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, रहस्योद्घाटन और शास्त्र, सत्र 9, सामान्य रहस्योद्घाटन का धर्मशास्त्र, विशेष रहस्योद्घाटन के माध्यम से परमेश्वर को जानना, पुराने नियम की विविधताएँ, इब्रानियों 1:1-2

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा प्रकाशितवाक्य और पवित्र शास्त्र पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 9 है, सामान्य प्रकाशितवाक्य का धर्मशास्त्र, विशेष प्रकाशितवाक्य के माध्यम से ईश्वर को जानना, पुराने नियम की विविधताएँ, इब्रानियों 1:1-2।

हम ईश्वर के प्रकाशितवाक्य के अपने अध्ययन को सामान्य प्रकाशितवाक्य के धर्मशास्त्र के साथ जारी रखते हैं क्योंकि हम चीजों को व्यवस्थित रूप से एक साथ रखने का प्रयास करते हैं। हम ईश्वर के सामान्य प्रकाशितवाक्य की वस्तुनिष्ठ वास्तविकता की पुष्टि करते हैं।

परमेश्वर हमेशा और हर जगह सभी लोगों के सामने खुद को प्रकट करता है। वह खुद को सृष्टि में प्रकट करता है, भजन 19:1 और 2, रोमियों 1:20 और 21, यूहन्ना 1:4 और 5। वह खुद को मनुष्यों, नैतिक स्वभाव, रोमियों 1:32, रोमियों 2:14 और 15, और सभोपदेशक 3:11 में प्रकट करता है। और वह खुद को तीसरी बार अपने विधान में प्रकट करता है, प्रेरितों के काम 14:15 से 17, प्रेरितों के काम 17:26, 27। इस प्रकार परमेश्वर सभी पुरुषों और महिलाओं को अपने बारे में ज्ञान से भर देता है।

हमारे आस-पास की दुनिया अपने निर्माता की गवाही देती है। हमारा नैतिक ढाँचा ईश्वर की गवाही देता है। बारिश उपलब्ध कराकर मानवता को जो लाभ वह प्रदान करता है, वह उसकी गवाही देता है।

सामान्य प्रकाशन परमेश्वर के बारे में क्या प्रकट करता है? यह उसके अस्तित्व और महिमा को प्रकट करता है, भजन 19:1। यह उसके ईश्वरीय स्वभाव, शक्ति और सृष्टिकर्ता के रूप में उसकी भूमिका को प्रकट करता है, रोमियों 1:20। यह उसकी पवित्रता, न्याय और न्याय के कार्य को प्रकट करता है, रोमियों 2:14 और 15। यह उसकी अच्छाई को प्रकट करता है, प्रेरितों के काम 14:17 और प्रेरितों के काम 17:26 और 27। इनसे अन्य ईश्वरीय गुण भी प्रकट होते हैं, जैसे बुद्धि, सुंदरता और ऐश्वर्य, जो तुरंत मन में आते हैं।

परमेश्वर का सामान्य प्रकाशन सार्वभौमिक है, हर समय घटित होता है, और सभी लोगों तक फैला हुआ है। इसलिए हम उसके प्रकाशन से दूर नहीं रह सकते। हम हर दिन निर्णय सुनाते हैं।

हम हर दिन ऐसे फैसले सुनाते हैं जो हमारे स्वभाव में अंकित परमेश्वर के नियम की वास्तविकता को प्रकट करते हैं, रोमियों 2:14, 15. जब हम आकाश या किसी भी प्राणी को देखते हैं, तो हम

उसकी हस्तकला को देखते हैं। हम उसकी दैवी भलाई के संपर्क में आए बिना फल या सब्ज़ियाँ नहीं खा सकते, प्रेरितों के काम 14:15 से 17.

वह राष्ट्र के समय और सीमाओं को व्यवस्थित करता है ताकि लोग उसे खोज सकें, प्रेरितों के काम 17:27, 28। परमेश्वर अपने बारे में ज्ञान नहीं छिपाता। सामान्य प्रकाशन के व्यक्तिपरक पहलू भी हैं।

मनुष्य तक क्या पहुँचता है? वे इस पर कैसे प्रतिक्रिया करते हैं? पौलुस सिखाता है कि परमेश्वर अपने बाहरी सामान्य प्रकाशन को सभी लोगों के लिए स्पष्ट करता है, रोमियों 1, 20. जब वे परमेश्वर द्वारा बनाई गई चीज़ों को देखते हैं तो वे परमेश्वर के गुणों को समझते हैं। इस अर्थ में, सभी परमेश्वर को जानते हैं।

आंतरिक सामान्य प्रकाशन के साथ भी ऐसा ही है। लोग जब भी अपने कार्यों पर निर्णय देते हैं या खुद को दोष देते हैं या दोष देते हैं, तो वे परमेश्वर की पवित्रता का ज्ञान दिखाते हैं, रोमियों 2, 15। इस अर्थ में, वे स्वयं और दूसरों के लिए परमेश्वर की पवित्रता और न्याय का प्रकाशन हैं।

हालाँकि, हालाँकि ईश्वर निष्पक्ष रूप से हम सभी के लिए खुद को प्रकट करता है, और हालाँकि वह यह सुनिश्चित करता है कि यह रहस्योद्घाटन हम तक पहुँचे, हम सृष्टि, विवेक या प्रोविडेंस में ईश्वर के रहस्योद्घाटन से पूरी तरह से लाभ नहीं उठा पाते हैं जैसा कि हमें चाहिए। सामान्य रहस्योद्घाटन पर ऐतिहासिक और समकालीन दृष्टिकोणों के लिए, क्रिस्टोफर मॉर्गन और मेरे द्वारा संपादित फेथ कम्स बाय हियरिंग, ए रिस्पॉन्स टू इनक्लूसिविज्म नामक पुस्तक में जनरल रिवीलेशन नामक अध्याय में डैनियल स्टेंज को देखें। मुझे कहना चाहिए और मैं। जब तक हम मसीह को नहीं जान लेते, हम सक्रिय रूप से ईश्वर के स्वयं के अच्छे प्रकटीकरण को दबाते, विकृत करते और उसका दुरुपयोग करते हैं।

हम उसके बाहरी सामान्य प्रकाशन का विरोध करते हैं और घमंड और विद्रोह में जीवित परमेश्वर के ज्ञान को मूर्तियों के लिए बदल देते हैं। हम पाखंड में अपनी नैतिकता की भावना का प्रयोग करके, रोमियों 2:2 और 3, और अधिक करके उसके आंतरिक सामान्य प्रकाशन का दुरुपयोग करते हैं। या जो हम जानते हैं कि गलत है उसमें लिप्त होकर और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करके।

हम परमेश्वर की कृपा का आनंद तो लेते हैं, लेकिन उसे महिमा देने में विफल रहते हैं और इसके बजाय मूर्तियों की पूजा करते हैं, यहाँ तक कि उन मूर्तियों की भी जिन्हें हम अपने मन में बनाते हैं। मैं अभी तीसरे पर हूँ। प्रेरितों के काम 14:14 से 17, प्रेरितों के काम 17:26 से 28।

परमेश्वर धैर्यवान है, लेकिन वह ऐसे मानवीय विद्रोह और कृतघ्नता का जवाब देने में विफल नहीं होगा। सुसमाचार के प्रचार में, वह उन सभी के लिए मसीह में उद्धार प्रदान करता है जो विश्वास करते हैं। लेकिन वह उन सभी के खिलाफ अपना क्रोध भी दिखाता है जो लगातार सामान्य प्रकाशन का विरोध करते हैं।

रोमियों 1:16 से 18. वह ऐसे लोगों को उनकी पापी इच्छाओं के हवाले कर देता है और उन्हें मूर्तिपूजा करने, पाप करने, और अंधकारमय सोच से पीड़ित होने की अनुमति देता है। रोमियों 1:21 से 28.

वह उन लोगों की निंदा करेगा जो जानते हैं कि क्या सही है और फिर भी गलत काम करते हैं। रोमियों 1:32. जो लोग अपने नैतिक निर्णयों में पाखंडी हैं, वे क्रोध के दिन में अपने लिए क्रोध जमा कर रहे हैं जब परमेश्वर का धार्मिक न्याय प्रकट होगा।

रोमियों 2:5. संक्षेप में, सामान्य प्रकाशन के प्रति इन लोगों की पापपूर्ण प्रतिक्रियाओं के कारण, परमेश्वर उन्हें बिना किसी बहाने के पकड़ता है। रोमियों 1, 20. अन्य प्रश्न उभरते हैं।

क्या प्राकृतिक धर्मशास्त्र, जो कि सामान्य प्रकाशन पर आधारित है, न कि शास्त्र पर, बचाए न गए लोगों के लिए संभव है? जैसा कि हमने देखा है, परमेश्वर के बारे में कुछ सत्य सामान्य प्रकाशन के माध्यम से चमकते हैं। परमेश्वर का अस्तित्व और महिमा। भजन 19 :1. ईश्वरीय प्रकृति, शक्ति और सृष्टिकर्ता के रूप में भूमिका।

रोमियों 1: 20. पवित्रता, न्याय, न्याय का कार्य। रोमियों 2:14 और 15. और उसकी भलाई। प्रेरितों के काम 14:17 और 17:26, 27. अन्य सत्य निश्चित रूप से निहित हैं। हम पापी हैं। दुष्टों को दंडित किया जाएगा। हमें क्षमा की आवश्यकता है। लोग मायने रखते हैं। ईश्वर जीवन का कारण है। और इसी तरह।

लेकिन कई महत्वपूर्ण सत्य और अवधारणाएँ केवल सामान्य प्रकाशन के माध्यम से कभी नहीं जानी जा सकतीं। त्रिदेव। यीशु।

उनकी प्रतिस्थापन मृत्यु। उनका शारीरिक पुनरुत्थान। विश्वास द्वारा औचित्य।

पवित्र आत्मा। और अन्य। इससे भी अधिक, मसीह और विशेष प्रकाशन के अलावा, हम उस ज्ञान और सत्य को विकृत करते हैं जो हमें दिया गया है।

दुर्भाग्य से, मसीह के बिना, हम प्रकाश की ओर नहीं बल्कि उससे दूर भागते हैं। हम परमेश्वर के सत्य को मूर्तिपूजा के लिए बदल देते हैं, और हम परमेश्वर के मार्ग से बचते हैं और इसके बजाय स्पष्ट पाप को चुनते हैं। क्या उद्धार न पाने वाले लोग प्राकृतिक रहस्योद्घाटन के प्रकाश पर ध्यान देकर बचाए जा सकते हैं? दुख की बात है कि इस सवाल का जवाब नहीं है।

मैं इसमें थोड़ा और जोड़ना चाहता हूँ कि एक प्राकृतिक धर्मशास्त्र है। मेरा मानना है कि बहुत सारे प्राकृतिक धर्मशास्त्र हैं, और वे सभी मूर्तिपूजक हैं। लोगों के पास सृष्टि को देखकर धर्मशास्त्र हैं। आदिम लोगों के पास एक धर्मशास्त्र है।

यह निश्चित रूप से एक विकृत धारणा है। और वास्तव में, इसमें कुछ सच्चाई है। ईश्वर या देवताओं का अस्तित्व।

किसी तरह का अलौकिक क्षेत्र। लेकिन हे भगवान। तो हाँ, इस ग्रह पर जितने मनुष्य हैं, उतने ही प्राकृतिक धर्मशास्त्र भी हैं।

उनमें से अरबों हैं, लेकिन वे मूर्तिपूजक हैं - वैश्विक चर्च की आवाज़ें। लॉज़ेन वाचा इन मामलों के बारे में वास्तविक ज्ञान दिखाती है।

हम, 150 से ज़्यादा देशों से यीशु मसीह के चर्च के सदस्य, परमेश्वर की महान मुक्ति के लिए उसकी स्तुति करते हैं। हम मानते हैं कि सुसमाचार पूरी दुनिया के लिए परमेश्वर का शुभ समाचार है, और हम उसकी कृपा से मसीह के आदेश का पालन करने, सभी मानवजाति को इसकी घोषणा करने और हर राष्ट्र के लोगों को शिष्य बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। हम पुष्टि करते हैं कि केवल एक ही उद्धारकर्ता और केवल एक ही सुसमाचार है।

हम मानते हैं कि प्रकृति में उनके सामान्य प्रकाशन के माध्यम से हर किसी को परमेश्वर के बारे में कुछ ज्ञान है, लेकिन हम इस बात से इनकार करते हैं कि यह हमें बचा सकता है, क्योंकि लोग अपनी अधार्मिकता से सत्य को दबाते हैं। हम मसीह और सुसमाचार के लिए हर तरह के समन्वयवाद और संवाद को भी अस्वीकार करते हैं, जिसका अर्थ है कि मसीह सभी धर्मों और विचारधाराओं के माध्यम से समान रूप से बोलते हैं।

इसके बजाय, यीशु को दुनिया के उद्धारकर्ता के रूप में घोषित करने का मतलब है पापियों की दुनिया के लिए परमेश्वर के प्रेम की घोषणा करना और सभी को पश्चाताप और विश्वास की पूरी तरह से व्यक्तिगत प्रतिबद्धता में उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में उसका जवाब देने के लिए आमंत्रित करना। आप इसे ऑनलाइन www.lausanne.org और अन्य जगहों पर पा सकते हैं। Lausanne Covenant, Lausanne Covenant टाइप करें।

समन्वयवाद, मैं बस इतना कह सकता हूँ कि कोई, कोई कह रहा है, यह क्या है? यह धर्मों का संयोजन है। यह है, इसलिए मैंने हाल ही में मैक्सिको में लोगों के वीडियो देखे, ब्राजील में, संयुक्त राज्य अमेरिका की तुलना में अधिक गुलामों को ब्राजील ले जाया गया, और उनमें से अधिकांश ने आत्मसात किया और ब्राजीलियाई बन गए और अपनी अफ्रीकी संस्कृति का कुछ हिस्सा खो दिया, संभवतः इसके कुछ हिस्सों को बरकरार रखा। लेकिन ब्राजील के एक हिस्से में, मैंने एक हिस्सा खो दिया है, और एक अलग अफ्रीकी-ब्राजील संस्कृति है।

ठीक है। और इसमें भोजन भी शामिल है, जिनमें से कुछ बहुत स्वादिष्ट लगते हैं, लेकिन दुर्भाग्य से, इसमें रोमन कैथोलिक चर्च भी शामिल हैं, लेकिन इसमें वे भी शामिल हैं जिन्हें हम अफ्रीकी पारंपरिक धर्म कहते हैं, लेकिन अब वे ब्राजील में हैं, और वे ईसाई नहीं हैं, और लोग नृत्य करते हैं और इसी तरह की अन्य चीजें करते हैं और उनके पास पुजारिन हैं जो दूसरे पक्ष से संपर्क बनाने का दावा करती हैं और इस तरह की अन्य चीजें। और यह रोमन कैथोलिक धर्म और एक अफ्रीकी पारंपरिक धर्म के बीच एक समन्वय है जिसे ब्राजील में निर्यात किया गया है।

सुखद लोग, मिलनसार लोग, दिलचस्प लोग, और फिर भी वे मूर्तिपूजा में लगे हुए हैं। बाइबल सीधी-सादी शिक्षाओं से भरी हुई है कि केवल यीशु ही उद्धारकर्ता है और मसीह में विश्वास ही इस

उद्धार को प्राप्त करने का एकमात्र साधन है। हम इसे प्रसिद्ध यूहन्ना 3.16 और उसके बाद के अध्यायों में देखते हैं।

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। जो कोई उस पर विश्वास करे, उस पर दण्ड की आज्ञा न हो।

यूहन्ना 3.18, जो कोई उस पर विश्वास नहीं करता, वह पहले से ही दोषी ठहराया गया है क्योंकि उसने परमेश्वर के इकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया है। और यह न्याय है कि प्रकाश दुनिया में आया है, यीशु का संदर्भ। लोग प्रकाश के बजाय अंधकार को पसंद करते हैं क्योंकि उनके काम बुरे हैं।

क्योंकि जो कोई दुष्टता करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, कि उसके काम प्रगट न हों। परन्तु जो सत्य का काम करता है, वह ज्योति के निकट आता है, ताकि यह स्पष्ट रूप से देखा जा सके कि उसके काम परमेश्वर में किए गए हैं। यूहन्ना 14:6 में यीशु ने कहा, मैं ही मार्ग, सत्य और जीवन हूँ।

कोई भी पिता के पास नहीं आ सकता। और यह यूहन्ना की बात है। जब यीशु ने कहा, मैं ही मार्ग हूँ, तो उसका मतलब था कि वह एकमात्र उद्धारकर्ता था, परमेश्वर और मनुष्य के बीच एकमात्र मध्यस्थ था।

यूहन्ना 14 के संदर्भ में, पिता का स्वर्ग में एक घर है, और यीशु ही मार्ग है। यह एक यूनानी शब्द है जिसका अर्थ है मार्ग या सड़क। यीशु ही पिता के स्वर्गीय घर तक जाने का एकमात्र मार्ग है।

यानी, वह एकमात्र उद्धारकर्ता है। मैं एक और बात कह रहा हूँ, मैं कह रहा हूँ कि इस पैटर्न का पालन करें। यीशु बोलता है, और वह कहता है, मैं हूँ, और इसके बाद एक विधेय नाममात्र, पुनरुत्थान, और जीवन आता है।

मैं दुनिया की रोशनी हूँ। इस मामले में, मैं भेड़ों के लिए द्वार हूँ या भेड़ों के लिए द्वार हूँ। यह उनके कथन के समान है, मैं ही मार्ग हूँ।

वह पिता के स्वर्गीय घर का मार्ग है, जो एक स्वर्गीय चित्र है। यीशु भेड़शाला में जाने का एकमात्र द्वार है, जो सांसारिक है। परमेश्वर के लोगों की भेड़शाला में जाने का यीशु के अलावा कोई दूसरा द्वार नहीं है।

वह मार्ग है, एकमात्र उद्धारकर्ता है। वह सत्य है। इसका मतलब है, लेकिन जॉन के लिए, इसका मतलब है कि वह ईश्वर का प्रकटकर्ता है।

वह परमेश्वर को पहले से कहीं ज़्यादा जानता है। परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा। यूहन्ना 1:17, यूहन्ना 1:18, एकमात्र परमेश्वर जो पिता के पास है, उसने उसे जाना है।

और वचन देहधारी हुआ; और हमारे बीच में डेरा किया। 1:14. और हम ने उस की महिमा देखी, विशेष करके उसके चिन्हों में।

जैसा कि अध्याय दो में पहले ही उल्लेख किया गया है, ग्लोरी पिता का एकमात्र पुत्र है, जो अनुग्रह और सत्य से भरा हुआ है। यीशु मार्ग है, दुनिया का एकमात्र उद्धारकर्ता है। वह सत्य है, परमेश्वर का प्रकटकर्ता है।

वह जीवन है, जीवन देने वाला है, वह जो हर उस व्यक्ति को अनन्त जीवन देता है जो उस पर विश्वास करता है। मैं तुमसे सच कहता हूँ, यूहन्ना 5:24, जो कोई मेरा वचन सुनता है और उस पर विश्वास करता है जिसने मुझे भेजा है, तुम देखते हो, यीशु परमेश्वर का इतना बड़ा प्रकटकर्ता है कि यदि तुम उसका वचन सुनते हो और विश्वास करते हो, तो तुम पिता पर विश्वास करते हो। जो मेरा वचन सुनता है और उस पर विश्वास करता है जिसने मुझे भेजा है, उसके पास अनन्त जीवन है।

वह न्याय के लिए नहीं आता, बल्कि वह मृत्यु से जीवन में चला गया है। यीशु अनन्त जीवन का दाता है। इतना ही नहीं, बल्कि अब, पुनर्जन्म में, वह जीवन देता है।

वह कहता है, वह घड़ी आ रही है और अब आ गई है जब मृतक परमेश्वर के पुत्र की आवाज़ सुनेंगे और जो सुनेंगे वे जीवित हो जाएँगे। यह अब पुनर्जन्म में है। इस घड़ी पर आश्चर्य मत करो। वह घड़ी आ रही है जब कब्रों में पड़े सभी लोग उसकी आवाज़ सुनेंगे, मनुष्य के पुत्र की आवाज़, और वे बाहर आ जाएँगे।

जिन्होंने अच्छा किया है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए, जिन्होंने बुरा किया है वे न्याय के पुनरुत्थान के लिए। कर्मों से उद्धार नहीं होता, और कर्म विश्वास की वास्तविकता या मिथ्यात्व को प्रदर्शित करते हैं। यीशु ही मार्ग है, एकमात्र उद्धारकर्ता है।

वह सत्य है, ईश्वर का प्रकटकर्ता है। वह जीवन है, जीवनदाता है। मैं पुनरुत्थान और जीवन हूँ, वह कहता है और अपने मित्र लाज़र को कब्र से बाहर निकालकर इसका प्रदर्शन करता है, जो चार दिनों से मृत था।

बहनों में से एक कहती है, प्रभु, प्रभु, वह बदबूदार होगा। और उस भाषा के बाद ये शब्द आते हैं। क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि अगर तुम विश्वास करोगी तो तुम परमेश्वर की महिमा को देखोगे? मृत्यु की बदबू के प्रकाश में सुसमाचार है, जो इसलिए प्रकट नहीं हुआ क्योंकि यीशु ने लाज़र को जीवित किया और पुनर्जीवित किया।

यही परमेश्वर की महिमा है जो उस घृणित संदर्भ में देखी जाती है। मसीह में परमेश्वर की महिमा से मृत्यु की दुर्गंध दूर हो जाती है। प्रेरितों के काम 4:12, स्वर्ग में मनुष्यों के बीच कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है जिसके द्वारा हमें नासरत के यीशु मसीह के नाम से बचाया जा सके।

रोमियों 10:13 से 17. यह वही है। वह संसार का एकमात्र उद्धारकर्ता है।

जो कोई प्रभु का नाम पुकारेगा, वह उद्धार पाएगा। पॉल पुराने नियम के भविष्यवक्ता का हवाला देता है। वह योएल 2:32 का हवाला देता है। क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम पुकारेगा, वह उद्धार पाएगा।

अंतर यह है कि योएल के लिए यह यहोवा था। पौलुस के लिए यह यहोवा है, जिसका नाम यीशु है। वे उसे कैसे पुकारेंगे जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया? और वे उस पर कैसे विश्वास करेंगे जिसके बारे में उन्होंने कभी नहीं सुना? और वे बिना किसी उपदेश के कैसे सुनेंगे? और वे बिना किसी के भेजे कैसे प्रचार करेंगे? जैसा कि लिखा है, सुसमाचार का प्रचार करने वालों के पाँव कितने सुन्दर हैं? यशायाह ने यह कहा।

संदेशवाहक आएगा, और जैसे ही आप उसे देखेंगे, वह खुशखबरी लेकर आएगा। उसके पैर वाकई खूबसूरत हैं। लेकिन अब सुसमाचार वाहकों के पैर खूबसूरत हैं।

लेकिन उन सभी ने सुसमाचार का पालन नहीं किया, क्योंकि यशायाह कहता है, हे प्रभु, हमसे जो सुना है, उस पर किसने विश्वास किया है? यशायाह 52, जो उस महान 53 अंश का हिस्सा है। इसलिए विश्वास सुनने से आता है और सुनना मसीह के वचन के माध्यम से होता है। मसीह ही उद्धार प्राप्त करने का एकमात्र साधन है।

1 यूहन्ना 5 इससे ज्यादा स्पष्ट नहीं हो सकता। यह संपन्न और वंचित के बीच अंतर बताता है। ओह, वे लोग जिनके पास सुंदरता है और वे लोग जिनके पास नहीं? नहीं।

जिनके पास बहुत धन है और जिनके पास नहीं है? नहीं। जिनके पास बहुत ताकत है और जिनके पास नहीं है? नहीं। ये वो चीजें हैं जिनकी हम कद्र करते हैं।

यही वह है जिसे परमेश्वर महत्व देता है। 1 यूहन्ना 5:11 और 12. और यह गवाही है कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है। और यह जीवन उसके पुत्र में है। 1 यूहन्ना 5:11, पद 12. जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है।

जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं है, उसके पास जीवन नहीं है। उसके बारे में चाहे जो भी सच हो? लेकिन हमें ध्यान देना चाहिए।

तो, हमने अभी कहा कि सामान्य प्रकाशन उद्धार नहीं करता। उद्धार पाने के लिए आपको यीशु पर विश्वास करना चाहिए। क्या इसका मतलब यह है कि सामान्य प्रकाशन दोषपूर्ण है? नहीं, यह सब कुछ प्रकट नहीं करता।

यह त्रिएकत्व या सुसमाचार को प्रकट नहीं करता, लेकिन नहीं, इसमें कुछ भी नहीं है। आप कह सकते हैं कि इसमें कुछ कमी है, लेकिन इसमें कुछ भी गलत नहीं है। लेकिन हमें ध्यान देना चाहिए कि सामान्य प्रकाशन में कुछ भी गलत नहीं है, क्योंकि यह वास्तविक और स्पष्ट है, जो परमेश्वर के बारे में कई सत्यों को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करता है।

समस्या न तो सामान्य प्रकाशन में है और न ही इसके प्रदाता में। बल्कि समस्या इसके प्राप्तकर्ताओं, पतित मनुष्यों में है। जबकि रोमियों 1 दिखाता है कि लोगों को सामान्य प्रकाशन के माध्यम से परमेश्वर के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया देनी चाहिए।

रोमियों 1 और 3 सिखाते हैं कि सभी दोषी हैं क्योंकि कोई भी अपने आप से उस तरह से प्रतिक्रिया नहीं करता है। परमेश्वर सभी मनुष्यों से मांग करता है कि वे धर्मी बनें। 1:18. लेकिन कोई भी धर्मी नहीं है, एक भी नहीं।

रोमियों 3:10. सृष्टि के द्वारा, सभी लोग परमेश्वर और उसकी सच्चाई को जानते हैं। रोमियों 1:19 से 21. लेकिन रोमियों 3:11, कोई भी ऐसा नहीं है जो समझता हो।

परमेश्वर गवाही देता है ताकि मनुष्य उसके पीछे चलें। प्रेरितों के काम 17:27. रोमियों 1:18 से 21. लेकिन अनुग्रह के बिना, कोई भी परमेश्वर को नहीं खोजता।

रोमियों 3:11. एक भी नहीं. मनुष्य को सृष्टिकर्ता से डरना, उससे प्रेम करना, उसका धन्यवाद करना और उसकी आराधना करनी चाहिए. रोमियों 1:21 से 25. लेकिन वे सृष्टि के सदृश मूर्तियों के लिए उसका व्यापार करते हैं और उनकी आँखों के सामने परमेश्वर का कोई भय नहीं है. रोमियों 1:23 से 25. रोमियों 3:18. यह एक भयानक आदान-प्रदान है.

भगवान की जगह छवियाँ रख दो। भगवान की सच्चाई की जगह झूठ रख दो। यह विद्रोह और इसके परिणामस्वरूप होने वाला अपराध सार्वभौमिक है।

पॉल इस बात पर जोर देते हैं कि समस्या ईश्वर या उनके सामान्य प्रकाशन में नहीं है। पॉल इस बात पर जोर देते हैं कि समस्या ईश्वर या उनके सामान्य प्रकाशन में नहीं है, बल्कि ईश्वर और उनके सामान्य प्रकाशन दोनों की सार्वभौमिक अस्वीकृति में है। सामान्य प्रकाशन मिशनों से कैसे संबंधित है? इस सवाल को प्रेरित करने वाली बात यह है कि सुसमाचार प्रचार में पॉल का सामान्य प्रकाशन की अपील करने का अभ्यास।

साथी यहूदियों को यीशु का प्रचार करते समय, पौलुस पुराने नियम का हवाला देते हुए, उन्हें व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पूर्ति करने वाला बताता है। प्रेरितों के काम 13:13 से 52 देखें। लेकिन जब दूसरे धर्मों के लोगों को प्रचार करता है, तो पौलुस सुसमाचार को एक बड़े ढांचे में रखता है।

प्रेरितों के काम 14:8 से 18 में, हमने देखा कि पौलुस ने सबसे पहले परमेश्वर को सृष्टिकर्ता के रूप में और सामान्य प्रकाशन में उसकी गवाही की ओर संकेत किया। जैसा कि हमने देखा, प्रेरितों के काम 17:16 से 31 में, उसने सृष्टिकर्ता के रूप में परमेश्वर और सृष्टि और विधान के माध्यम से उसके सच्चे स्वभाव और गवाही पर भी प्रकाश डाला। पौलुस के लिए, सामान्य प्रकाशन उद्धार के लिए अपर्याप्त है, लेकिन सुसमाचार के लिए एक महत्वपूर्ण प्रारंभिक बिंदु है।

मिशनरियों के आने से पहले, परमेश्वर काम पर है, अविश्वासियों को अपने अस्तित्व और महिमा के बारे में बता रहा है। भजन 19:1, उसका ईश्वरीय स्वभाव, शक्ति और सृष्टिकर्ता के रूप में

उसकी भूमिका। रोमियों 1:20, उसकी पवित्रता, न्याय और हृदय पर लिखी व्यवस्था के माध्यम से न्याय का कार्य।

रोमियों 2:14.15, और उसकी भलाई। प्रेरितों के काम 14:17, प्रेरितों के काम 17:26 और 27। मिशनरी सुसमाचार को साझा करके इस पिछले संचार को दोहराते हैं, स्पष्ट करते हैं और विस्तारित करते हैं।

मिशनरी शून्य से शुरू नहीं करते हैं, बल्कि परमेश्वर द्वारा अविश्वासियों के साथ बनाए गए संपर्क बिंदु पर निर्माण करते हैं, क्योंकि वे विश्वासियों से मसीह की ओर विश्वास करने का आग्रह करते हैं। इस प्रकार, सामान्य प्रकाशन पर व्याख्यान समाप्त होता है। विशेष प्रकाशन के माध्यम से परमेश्वर को जानना।

जैसा कि इब्रानियों 1:1 और 2 से देखा गया है, पुराने और नए नियम में प्रकाशन के बीच अंतर हैं, लेकिन हम पुराने और नए नियम में परमेश्वर के प्रकाशन की अंतर्निहित एकता को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते। बहुत पहले कई बार और कई तरीकों से, ESV, परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बात की थी। लेकिन इन अंतिम दिनों में, उसने अपने पुत्र के द्वारा हमसे बात की है, जिसे उसने सब वस्तुओं का वारिस नियुक्त किया है, जिसके द्वारा उसने संसार की रचना भी की है।

हां, जैसा कि हमने पहले देखा, इसमें बहुत अंतर है, जैसे कि बहुत बड़ा अंतर, लेकिन एक समानता भी है। बहुत पहले, परमेश्वर ने पिताओं से बात की थी। इन अंतिम दिनों में, उसने अपने बेटे के ज़रिए हमसे बात की है।

परमेश्वर ने खुद को पुराने और नए नियम में प्रकट किया है। वह बाइबल के रहस्योद्घाटन का लेखक है। वह प्रकटकर्ता, बोलने वाला परमेश्वर है।

वास्तव में, हालाँकि बाइबल में प्रगतिशील रहस्योद्घाटन है, खासकर पुराने और नए नियम में, पुराने और नए नियम का रहस्योद्घाटन एकीकृत है क्योंकि यह सब परमेश्वर की दिव्य वाणी है। मैं जल्दी से मानवीय शब्दों को जोड़ सकता हूँ। इब्रानियों 1:1 और 2 से भी यह स्पष्ट है कि परमेश्वर का रहस्योद्घाटन प्रगतिशील है।

अर्थात्, वह धीरे-धीरे समय के साथ अपने लोगों के सामने खुद को प्रकट करता है। परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से बात की और अपने बेटे के माध्यम से बात की है। प्रकटीकरण की प्रगतिशील प्रकृति अनिवार्य रूप से पूरे इतिहास में मनुष्यों के लिए परमेश्वर के क्रमिक प्रावधान से जुड़ी हुई है।

परमेश्वर के रहस्योद्घाटन की एकता और प्रगतिशील प्रकृति दोनों ही यीशु के परिचित शब्दों, मत्ती 5:17 और 18 में स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। पहाड़ी उपदेश के एक भाग के रूप में, हमारे प्रभु ने कहा, यह मत सोचो कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं को समाप्त करने आया हूँ। मैं उन्हें समाप्त करने नहीं, बल्कि उन्हें पूरा करने आया हूँ।

क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूँ, जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएँ, तब तक व्यवस्था से एक बिन्दु भी नहीं टलेगा जब तक सब कुछ पूरा न हो जाए। हम प्रकाशन की एकता को तीन तरीकों से देखते हैं। यीशु सिखाते हैं कि वह व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं को खत्म नहीं करता बल्कि पूरा करता है।

यह पुराने नियम का रहस्योद्घाटन है। व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की स्थायित्व के बारे में उनका स्पष्ट दावा और उनका जोर कि यह सब पूरा होगा। तो, तीन तरीके हैं।

वह विनाश करने नहीं, बल्कि पूरा करने आया था। नंबर एक, वह कहता है, जब तक एक भी अक्षर और एक भी अक्षर मिट नहीं जाएगा। यानी यह स्थायी है।

जब तक सब कुछ पूरा नहीं हो जाता, यानी वह इस तथ्य पर जोर देता है कि यह पूरा होगा या पूरा होगा। परमेश्वर उन उद्देश्यों को पूरा करेगा जिसके लिए उसने अपना वचन दिया था। इस तरह के रहस्योद्घाटन की प्रगतिशील प्रकृति भी स्पष्ट है।

व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता यीशु में पूर्णता की ओर आगे बढ़ रहे हैं। पुराने नियम का रहस्योद्घाटन, विविधताएँ। मैं यहाँ अपने पूर्व व्यवस्थित धर्मशास्त्र के प्रोफेसर, जो अब प्रभु के साथ हैं, रॉबर्ट जे. डन्सवीलर को श्रेय देना चाहता हूँ, जिन्होंने हैटफील्ड, पेंसिल्वेनिया में बाइबिल थियोलॉजिकल सेमिनरी में पढ़ाया था, और जिन्होंने हम में से कई लोगों पर, हम सभी पर जिन्होंने उनके अधीन अध्ययन किया, अपनी छाप छोड़ी।

उन्होंने निश्चित रूप से विधि और अपनी महानता के मामले में मुझमें यह गुण छोड़ा है। मुझे उम्मीद है कि मैंने दूसरों के साथ व्यवहार करते समय उनके कुछ शालीन शिष्टाचार दिखाए हैं, खासकर उन लोगों के साथ जो हमसे असहमत हैं और इसी तरह। वाह। विविधताएँ।

पुराने नियम में परमेश्वर ने खुद को अलग-अलग तरीकों से प्रकट किया है। इब्रानियों 1:1. इनमें ईश्वरीय दर्शन, दर्शन और स्वप्न, ऊरीम और तुम्मीम, चिट्ठी डालना, चमत्कार, श्रव्य भाषण और भविष्यवाणियाँ शामिल हैं। हम इनमें से प्रत्येक की बारी-बारी से जाँच करेंगे।

ईश्वरीय दर्शन मानवीय इंद्रियों, विशेषकर दृष्टि के लिए ईश्वर की अभिव्यक्तियाँ हैं। अदृश्य ईश्वर मूसा को जलती हुई झाड़ी में दिखाई देकर खुद को दृश्यमान बनाता है, निर्गमन 3 :1-6। मूसा कितना आश्चर्यचकित हुआ। उसने पहले कभी ऐसी झाड़ी नहीं देखी थी।

यहोवा ने मूसा से कहा, " अब तू देखेगा कि मैं फिरौन से क्या करूँगा। वह बलवन्त हाथ से मेरी प्रजा को निकाल देगा। और बलवन्त हाथ से वह उन्हें अपने देश से निकाल देगा।"

परमेश्वर ने मूसा से कहा, "मैं यहोवा हूँ। मैं अब्राहम, इसहाक और याकूब को सर्वशक्तिमान परमेश्वर के रूप में दिखाई दिया। लेकिन मैंने यहोवा के नाम से खुद को उन पर प्रकट नहीं किया।"

मैंने उनके साथ कनान देश देने की वाचा भी स्थापित की। और मैं गलत अध्याय पढ़ रहा हूँ, क्षमा करें। निर्गमन का अध्याय 3।

मूसा अपने ससुर यित्रो नामक मिद्यान के याजक की भेड़-बकरियों को चरा रहा था। और वह अपनी भेड़-बकरियों को जंगल के पश्चिम की ओर ले जाकर परमेश्वर के पर्वत होरेब के पास पहुँचा। और यहोवा का दूत एक झाड़ी के बीच से आग की लौ में उसे दिखाई दिया।

उसने देखा कि झाड़ी जल रही थी, फिर भी वह भस्म नहीं हुई। तब मूसा ने कहा, मैं इस महान दृश्य को देखने के लिए पीछे जाऊँगा, कि झाड़ी क्यों नहीं जल रही है। जब यहोवा ने देखा कि वह देखने के लिए पीछे मुड़ा है, तो परमेश्वर ने उसे झाड़ी से बाहर बुलाया, मूसा, मूसा।

उसने कहा, "मैं यहाँ हूँ।" फिर उसने कहा, "निकट मत आ, अपनी जूतियाँ उतार दे। क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है।"

और उसने कहा कि मैं तुम्हारे पिता का परमेश्वर हूँ, अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर। और मूसा ने अपना चेहरा छिपा लिया क्योंकि वह परमेश्वर को देखने से डरता था, यहाँ तक कि परमेश्वर के इस प्रत्यक्ष रूप को भी देखने से। यह पवित्र भूमि थी क्योंकि परमेश्वर ने खुद को वहाँ प्रकट किया था।

भगवान द्वारा वहाँ अपनी उपस्थिति प्रकट करना बंद करने के एक सेकंड बाद, यह पवित्र भूमि नहीं रह जाती। और मैं मज़ाक में कहना पसंद करता हूँ कि अगर आज ऐसा होता, तो मूसा या कोई और रेत, पवित्र रेत, इत्यादि की छोटी शीशियाँ बेच रहा होता। और यह हास्यास्पद होता।

ईश्वरीय दर्शन अदृश्य ईश्वर के मानवों के सामने प्रकट होने को कहते हैं। ईश्वर ने खुद को इस्राएल के सामने एक खंभे के रूप में प्रकट किया, जो दिन में बादल का खंभा और रात में आग का खंभा था। निर्गमन 13:31.

और यशायाह ने प्रभु को देखा। एक मिनट रुकिए। ईश्वर अदृश्य है।

यही ईश्वरदर्शन का पूरा सार है। अदृश्य ईश्वर आंशिक रूप से दृश्य बन जाता है। यशायाह ने उसे सिंहासन पर राजा के रूप में देखा।

जिस वर्ष राजा उज्जियाह की मृत्यु हुई, यशायाह 6 में, मैंने प्रभु को एक ऊँचे सिंहासन पर बैठे देखा। और उसके वस्त्र का घेरा मंदिर को भर गया। उसके ऊपर सेराफिम खड़े थे।

प्रत्येक के छह पंख थे। दो से उसने अपना चेहरा और दो से अपने पैर ढके थे।

वह दो जनों के साथ उड़ गया। और एक जन दूसरे जन से पुकारकर कहने लगा, सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है। सारी पृथ्वी उसकी महिमा से भरी हुई है।

और पुकारनेवाले की आवाज़ से डेवढ़ी की नींव हिल गई। और घर धुँ से भर गया। और मैंने कहा, हाय मुझ पर, क्योंकि मैं खो गया हूँ।

क्योंकि मैं अशुद्ध होठों वाला मनुष्य हूँ, और अशुद्ध होठों वाले लोगों के बीच में रहता हूँ। क्योंकि मैंने अपनी आँखों से राजा, सेनाओं के यहोवा को देखा है। ये तो बस तीन उदाहरण हैं।

जलती हुई झाड़ी। यशायाह ने प्रभु को ऊँचा और ऊपर उठा हुआ देखा। परमेश्वर ने कृपापूर्वक इस्राएल का नेतृत्व किया, इस्राएल के सामने प्रकट हुआ।

दिन-रात बादल के खंभे में, आग के खंभे में। हे भगवान, वे रात की रोशनी जलाकर सो गए। बड़ी रात की रोशनी।

ओह, बेटा। दर्शन और स्वप्न वे साधन हैं जिनके द्वारा परमेश्वर पुराने नियम के संतों को अपनी इच्छा बताता है, जिसमें दानिय्येल भी शामिल है। दानिय्येल 10, 4 और 5 में एक दर्शन में। और उत्पत्ति 28 में एक स्वप्न में याकूब को।

दानिय्येल 10:4 से 9. पहले महीने के 24वें दिन, जब मैं टिग्रिस नामक बड़ी नदी के किनारे खड़ा था, मैंने अपनी आँखें उठाई और क्या देखा कि एक आदमी सन के कपड़े पहने हुए है और उसकी कमर में उफाज़ के बढ़िया सोने का एक पट्टा है। उसका शरीर बर्ले के समान था, उसका चेहरा बिजली की तरह चमक रहा था, उसकी आँखें जलती हुई मशालों की तरह थीं, उसकी भुजाएँ और पैर पीतल की चमक की तरह थे, और उसके शब्दों की आवाज़ भीड़ की आवाज़ की तरह थी। और मैं, दानिय्येल, अकेले ने यह दर्शन देखा, क्योंकि मेरे साथ रहने वाले लोगों ने यह दर्शन नहीं देखा।

लेकिन उन पर बहुत ज़्यादा थरथराहट छा गई और वे छिपने के लिए भाग गए। इसलिए, मैं अकेला रह गया और मैंने यह महान दर्शन देखा और मुझमें कोई ताकत नहीं बची। मेरा चमकीला रूप भयानक रूप से बदल गया और मुझमें कोई ताकत नहीं बची।

फिर मैंने उसके शब्दों की आवाज़ सुनी, और जैसे ही मैंने उसके शब्दों की आवाज़ सुनी, मैं गहरी नींद में मुँह के बल ज़मीन पर गिर पड़ा। याकूब का दर्शन उत्पत्ति 28:17, 10 से 17 में दर्ज है। इसके बाद, हम अपने अगले व्याख्यान तक विराम लेंगे।

हम पुराने नियम में परमेश्वर द्वारा खुद को प्रकट करने के विभिन्न तरीकों, विशेष प्रकाशन के विभिन्न तरीकों को देख रहे हैं। ये प्रकाशन सभी लोगों के लिए हर समय नहीं होते, बल्कि ये परमेश्वर के लोगों के लिए विशेष समय और विशेष स्थानों पर होते हैं। लाबान के पास जाते समय याकूब को एक स्वप्न आता है।

याकूब बेशेबा से निकलकर हारान की ओर चला गया। वह एक निश्चित स्थान पर पहुँचा और उस रात वहीं रहा क्योंकि सूरज डूब चुका था। उसने उस स्थान से एक पत्थर उठाया और उसे अपने सिर के नीचे रख दिया और उस स्थान पर सो गया।

और उसने स्वप्न देखा, और उसने स्वप्न देखा, और क्या देखा, कि पृथ्वी पर एक सीढ़ी खड़ी है, और उसका शीर्ष स्वर्ग तक पहुँच रहा है। और परमेश्वर के दूत उस पर चढ़ते-उतरते हैं। और देखो, यहोवा उसके ऊपर खड़ा है, और कह रहा है, मैं यहोवा, तेरे पिता अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर हूँ; जिस भूमि पर तू लेटा है, उसे मैं तुझे और तेरे वंश को दूँगा।

तेरी सन्तान पृथ्वी की धूल के समान होगी। तू पश्चिम, पूर्व, उत्तर, दक्षिण, चारों ओर फैलेगा। और तेरे और तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे कुल आशीष पाएंगे।

देख, मैं तेरे संग हूँ, और जहां कहीं तू जाए वहां तेरी रक्षा करूँगा, और तुझे इस देश में लौटा ले आऊँगा। क्योंकि मैं जब तक अपना वचन पूरा न कर लूं तब तक तुझे न छोड़ूँगा। तब याकूब नींद से जाग उठा, और कहने लगा, निश्चय यहोवा इस स्थान में है।

और मैं यह नहीं जानता था। और वह डर गया और बोला, यह स्थान कितना भयानक है? यह परमेश्वर के भवन को छोड़ और कुछ नहीं है। और यह स्वर्ग का द्वार है।

हम अपने अगले व्याख्यान में पुराने नियम के विशेष रहस्योद्घाटन के साधनों पर अपना व्याख्यान देंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा रहस्योद्घाटन और पवित्र शास्त्र पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 9 है, सामान्य रहस्योद्घाटन का धर्मशास्त्र, विशेष रहस्योद्घाटन के माध्यम से ईश्वर को जानना, पुराने नियम की विविधताएँ, इब्रानियों 1:1-2।